पाठ-2

मैं हूँ नीम

आइए सीखें - ● पेड़-पौधों की उपयोगिता ● औषधीय पेड़-पौधों की जानकारी ● पर्यावरण के प्रति चेतना ● विलोम शब्द ● संज्ञा का परिचय

मैं नीम का पेड़ हूँ। आपने मुझे जरूर देखा होगा। मैं गाँव से लेकर शहर तक हर जगह मिलता हूँ। यह सच है कि आज भी सुबह - सुबह दातुन के लिए मेरा नाम लिया जाता है। मेरी दातुन कड़वी तो जरूर होती है पर दाँतों के लिए बहुत लाभकारी होती है। इससे दाँत मजबूत होते हैं और उनमें कीड़ा भी नहीं लगता।

मेरी पत्तियाँ इतनी घनी होती हैं कि सूर्य की किरणें धरती तक नहीं पहुँच पाती। मेरी सघन शीतल छाया में बच्चे खेलते और पशु आराम करते मिल जाते हैं। गाँव में बड़े - बूढ़ों की चौपाल मेरे ही नीचे जमती है।

मैं ऐसा पेड़ हूँ जो जीवन भर आपके काम आता हूँ पर मुझे खेद है कि कुछ लोग मुझे बिना सोचे - समझे निरंतर काटते जा रहे हैं जिससे मेरी

शिक्षण-संकेत : ■ शिक्षक पाठ का आदर्श वाचन करें। ■ पेड़-पौधों से होने वाले लाभों पर चर्चा करें। ■ पर्यावरण के प्रति चेतना जागृत करें। ■ अन्य औषधीय पौधों एवं पेड़ों की जानकारी दें। ■ पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित करें।

संख्या दिन-पर-दिन घटती जा रही है।

मैं चाहता हूँ आप मुझे बहुत करीब से जानें, समझें और मुझे बचाने का प्रयास करें।

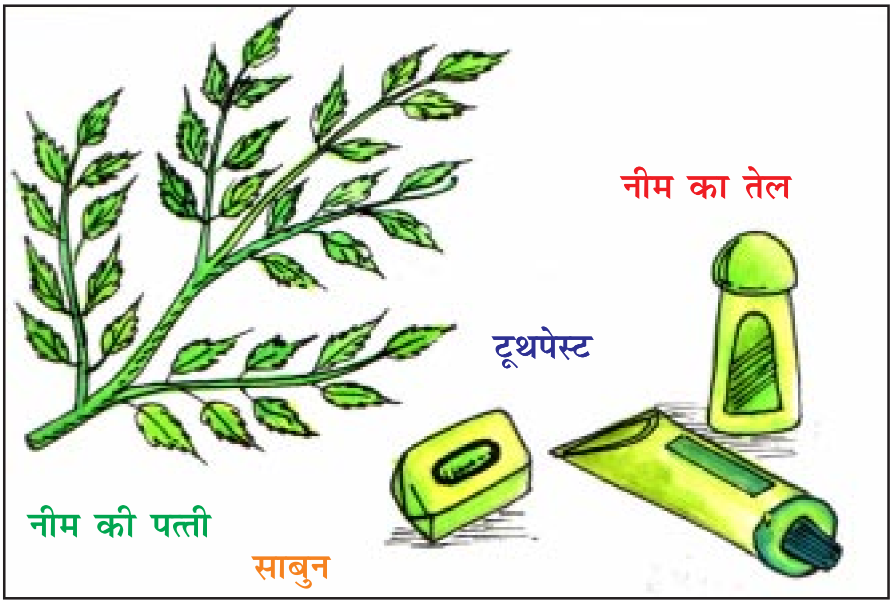

आप जानते हैं कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए शुद्ध - हवा बहुत जरुरी है। मैं आपको बताऊँ – मेरी पत्तियों पर जैसे ही सूर्य की किरणें पड़ती हैं ये हवा को शुद्ध कर देती हैं।

आपने अक्सर अम्मा को अनाज रखते-समय मेरी सूखी पत्तियाँ डालते देखा होगा। ऐसा करने से अनाज में कीड़े नहीं लगते। इसी प्रकार सन्दूक में गरम कपड़ों के बीच मेरी सूखी पत्तियाँ रख देने से गरम कपड़ों में कीड़ा नहीं लगता। एक बात और बता दूँ कि जब मच्छर भाई आपको परेशान करने लगे तो आप मेरी सूखी पत्तियाँ जला दें। मच्छर तो मच्छर हवा में उड़ने वाले छोटे-छोटे अन्य जीव तक भाग जाएँगे।

मेरे पेड़ पर फूल और फल भी लगते हैं। मेरे फल को निबौरी कहते है। मेरे फूल ओर निबौरी भी बहुत काम की चीजें हैं। इन्हें खाने से पेट की कई बीमारियाँ दूर हो जाती है। निबौरी की गुठली से तेल निकलता है। इस तेल से साबुन बनाते हैं। निबौरी की गुठली का तेल और इस तेल से बना 'साबुन' फोड़े-फुंसियों को ठीक कर देता है। हाँ, तेल बनाने के बाद जो खली बचती हैं वह खाद के काम आती है। बच्चों को फुंसियाँ बहुत तंग करती हैं। अगर फुंसियों पर मेरी छाल घिस कर लगा दें तो ये फुंसियाँ बिलकुल ठीक हो जाएँगी।

लो जल्दी - जल्दी में मैं यह बताना भूल ही गया कि जब कभी बुखार

आ जाए, मेरी जड़ को पानी में उबालकर पी लेने से बुखार सिर पर पैर रख कर भागेगा।

देखा आपने! मेरे सभी अंग – जड़, तना, शाखा, पत्ती, फूल और फल किसी न किसी काम में लाए जाते हैं। अब तो आप जान गए, मैं बीमारियों को भगाने वाला पेड़ हूँ। क्या गाँव, क्या शहर-सब जगह लोग मुझे लगाते हैं और मेरी ठंडी छाया में बैठकर सुखी होते हैं।

शब्दार्थ

सघन	– घना	**शीतल**	– ठंडा
खेद	– दु:ख	**निरंतर**	– लगातार
प्रयास	– प्रयत्न, कोशिश	**शुद्ध**	– स्वच्छ, साफ, निर्मल
अक्सर	– प्राय:, अधिकतर	**तंग**	– परेशान
चौपाल	– पंचायत की जगह, चौरा	**लाभकारी**	– फायदेमन्द
गुठली	– बीज		

अभ्यास

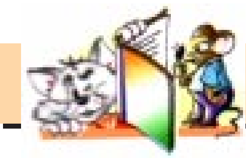

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

क. नीम की सूखी पत्तियाँ गरम कपड़ों के बीच क्यों रखते हैं?

ख. नीम की दातुन करने से क्या लाभ है?

ग. नीम के तेल से क्या-क्या बनाया जाता है?

घ नीम की जड़ को पानी में उबालकर पीने से क्या लाभ होता है?

ङ: नीम की सूखी पत्तियाँ क्यों जलाते हैं?

च. नीम को बीमारियाँ भगाने वाला पेड़ क्यों कहते हैं?

2. नीचे लिखे वाक्यों के सामने सही (✓) या गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

क. नीम के फल से साबुन बनता है। ☐

ख. नीम की सूखी पत्तियाँ जलाने से मच्छर भाग जाते हैं। ☐

ग. अच्छे स्वास्थ्य के लिए शुद्ध हवा जरुरी नहीं है। ☐

घ. नीम की छाल पानी में घिस कर कर लगाने से फुंसियाँ ठीक हो जाती हैं। ☐

3. खाली स्थान भरिए-

अ. निबौरी की गुठली से .... निकलता है।

आ. अच्छे स्वास्थ्य के लिए शुद्ध हवा .... है।

इ. मेरी .... पत्तियाँ रखने से गरम कपड़ों में .... नहीं लगता।

ई. मेरी पत्तियाँ इतनी घनी होती है कि सूर्य की .... धरती तक .... पहुँच पाती।

भाषा अध्ययन

1. पढ़िए, समझिए और लिखिए -

नाली – नालियाँ

बूटी – ....

निबौरी – ....

गुठली – ....

पत्ती – ....

2. नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार पाठ में आए शब्दों को छाँटकर लिखिए।

सुबह-सुबह

3. पढ़िए, समझिए और लिखिए।

रात	–	सुबह	रात – दिन
धूप	–	कड़वी	....
अशुद्ध	–	सूखी	....
गीली	–	गरम	....
मीठी	–	शुद्ध	....
ठंडी	–	छाया	....
शाम	–	दिन	....

यह भी जानिए : बहुत से शब्द ऐसे होते हैं, जो विपरीत अर्थ को प्रकट करते हैं उन्हें विलोम शब्द कहते हैं।

4. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए।

गाव	–	गाँव	पेड	–	....
दात	–	....	मचछर	–	....
साबून	–	....	सूंय	–	....
कड़बी	–	....	नीबौरी	–	....
बीमारिया	–	....	फुंसिया	–	....

प्र.4. चित्र में देखिए और लिखिए-

पशु-पक्षियों/व्यक्तियों के नाम	वस्तुओं के नाम	स्थान के नाम
चिड़िया	पंखा	रतनपुर

यह भी जानिए : किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं।

योग्यता विस्तार

- कक्षा में अभिनय कीजिए –

  ● मैं हूँ नीम ● मैं हूँ अमरूद ● मैं हूँ पतंग ● मैं हूँ रसगुल्ला
- अपने आस–पास पाए जाने वाले फल देने वाले पेड़–पौधों के नाम लिखिए।
- किन्हीं तीन पेड़–पौधों के नाम बताइए जो दवाई के काम आते हैं?
- **चित्र के बारे में लिखिए –**

....

....

....

शिक्षण-संकेत : ■ बच्चों से अभिनय करवाएँ। रंग, आकार, स्वाद, लाभ, हानि आदि पर चर्चा करवाएँ ■ स्थानीय औषधियों एवं पेड़ों के बारे में चर्चा करें।